बच्चों की ख़ुशहाली का पोषण करने के लिए शिक्षकों को तैयार करना

राजश्री श्रीनिवासन

शैक्षिक व्यवहार किसी समाज में छोटे बच्चों की ख़ुशहाली के उद्देश्य से किया जाने वाला एक प्रयास होता है। जॉन वाइट (2011) अपनी किताब एक्सप्लोरिंग वेल बीइंग इन स्कूल्स, में बताते हैं कि शैक्षिक लक्ष्य के तौर पर स्कूली शिक्षा को प्रत्येक बच्चे को एक ऐसा जीवन जीने के लिए समर्थ बनाना चाहिए जो उनके लिए व्यक्तिगत रूप से तो समृद्धकारी हो ही, साथ ही वे दूसरों को भी ऐसा जीवन जीने में मदद कर सकें। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 बताती है, "...सामाजिक न्याय और समानता के संवैधानिक मूल्यों पर आधारित एक धर्मनिरपेक्ष, समतामूलक और बहुलतावादी समाज के आदर्श से प्रेरणा लेते हुए इस दस्तावेज़ में शिक्षा के कुछ व्यापक उद्देश्य चिह्नित किए गए हैं। इनमें शामिल हैं विचार और कर्म की स्वतंत्रता, दूसरों की भलाई और भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता, नई स्थितियों का लचीलापन और रचनात्मक तरीक़े से सामना करना, लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी की प्रवृत्ति और आर्थिक प्रक्रियाओं व सामाजिक बदलाव में योगदान देने के लिए काम करने की क्षमता।" (एनसीएफ़ दस्तावेज़, पृष्ठ-7)।

इस अभिव्यक्ति में, ख़ुशहाली, व्यक्तिगत उपलब्धि या अनुभव के अपने विचार की व्याख्या के परे चली जाती है। यह अच्छे स्वास्थ्य, मनो-सामाजिक क्षमताओं और नैतिक संवेदनशीलता का एक अनगढ़-सा मेल बन जाती है जो उस समाज के सन्दर्भों में अपना ख़ास अर्थ ग्रहण कर लेती है जिसमें शैक्षिक व्यवहार हो रहा है। बच्चों की ख़ुशहाली, एक प्रक्रिया और एक अनुभव, दोनों ही रूपों में विकास की पारिस्थितिकियों जैसे परिवार, सहपाठियों, स्कूलों और सामाजिक-राजनैतिक, आर्थिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और नीति सन्दर्भों से प्रभावित होती है और बदले में उन्हें प्रभावित करती है। शैक्षिक परिवेशों में ख़ुशहाली, रिश्तों की गुणवत्ता और अन्तरवैयक्तिक ज़रूरतों, हितों, क्षमताओं और चुनौतियों के प्रति प्रतिक्रियाओं पर निर्भर करती है। यह किसी बच्चे की अन्तर्निहित क्षमता या कोई व्यक्तिगत विशिष्टता नहीं होती है। यह बचपन से लेकर किशोरावस्था तक विकास की प्रक्रिया में उभरती है और उनके भविष्य को भी प्रभावित करती है। यानी, अपनी ख़ुशहाली के बारे में बच्चों के दृष्टिकोण समय और स्थान के साथ अपने परिवेश के साथ तालमेल करने से उभरते हैं। इसलिए, बचपन के दौरान अपने सामाजिक परिवेश में वे जिन सहयोगी रिश्तों का अनुभव करते हैं उन रिश्तों का उनकी ख़ुशहाली के लिए बहुत मायना होता है।

स्कूली शिक्षा, शिक्षण और ख़ुशहाली

स्कूली शिक्षा बच्चों की ख़ुशहाली के लिए आवश्यक बहुत-से क्षेत्रों में उनकी क्षमताओं के विस्तार के लिए एक माहौल प्रदान करती है - समझने और तर्क करने की प्रक्रिया में शामिल होने की क्षमता, अकादमिक ज्ञान, सामाजिक-भावनात्मक और नैतिक विकास (इसमें शामिल है दूसरों के साथ सक्रिय और मूल्यवान रिश्ते बनाना और गतिविधियाँ करना) और लोकतांत्रिक नागरिकता की प्रक्रियाओं में हिस्सेदारी। इसलिए, स्कूलों का यह कार्य है कि वे सीखने का ऐसा माहौल सुनिश्चित करें जो अन्य बातों के अलावा समानुभूति, गरिमा, सम्मान, स्वायत्तता और आत्म-अभिव्यक्ति के ढेर सारे अवसरों से लैस हो। ऐसी शिक्षा जिसका लक्ष्य ख़ुशहाली की एक सन्दर्भित समझ हो, ख़ुद में न्याय और परवाह करने के मूलभूत विचारों को समाहित किए रहती है। न्याय और परवाह करना समावेशी स्कूली शिक्षा के अनिवार्य अंग होते हैं और एक 'पारस्परिक व्यवहार' के रूप में शिक्षण के विचार की आधारशिला होते हैं।

> सामाजिक न्याय के महत्त्वपूर्ण कक्षा व्यवहार इस विचार पर आधारित होते हैं कि कक्षा में सभी बच्चों को न्यायपूर्ण और निष्पक्ष अधिकार, अवसर और संसाधनों तक पहुँच उपलब्ध हों। कक्षाओं को मानवीय बनाने का लक्ष्य रखने वाली सामाजिक न्याय की प्रक्रियाएँ विद्यार्थियों को उनकी अपनी पहचानों को स्वीकार करने, पूर्वाग्रहों को नज़रअन्दाज़ करने और विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले लोगों का सम्मान करने में मदद करती हैं। सामाजिक न्याय आधारित दृष्टिकोणों में शामिल है - बच्चों में कमियाँ ढूँढ़ने की बजाय उनकी विभिन्नताओं पर ध्यान केन्द्रित करना, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक पूर्व ज्ञान की बुनियाद पर आगे बढ़ना, परस्पर विश्वास और समानुभूति पर आधारित एक कक्षा संस्कृति का निर्माण करना, जहाँ कहीं भी अन्याय है उस पर सवाल करने में विद्यार्थियों की मदद करना और अपने समुदायों व नागरिक जुड़ावों के प्रति बच्चों की प्रतिबद्धता को पोषित करना।

अच्छी शिक्षा के केन्द्र में परवाह करना होता है। परवाह करना कोई अस्पष्ट या ख़ुशी का अनुभव कराने वाला विचार नहीं है। इसका मतलब वह पारस्परिक गुण जो दूसरों की बेहतरी के लिए एक सक्रिय सरोकार दिखाता हो। यह बच्चे और शिक्षक के बीच अन्तर वैयक्तिक रिश्तों के बनने से अधिक कुछ है। इसमें सम्बन्धों को बनाए रखने की क्षमता व बच्चों की तरफ़ संवेदनशीलता और लचीलेपन के साथ ध्यान देने की प्रतिबद्धता शामिल है। परवाह करने की प्रक्रियाएँ उन तमाम पारस्परिक व्यवहारों में देखी जा सकती हैं जो शिक्षकों और बच्चों के बीच होते हैं - उम्र के अनुसार पाठ-योजना बनाना, विद्यार्थियों को कक्षा प्रक्रियाओं से जोड़ना, अभिव्यक्ति के लिए सुरक्षित जगह प्रदान करना, विद्यार्थियों की तारीफ़ करना, निर्णय की प्रक्रिया में बच्चों के परिप्रेक्ष्य को शामिल करना, कक्षा के अन्दर और कक्षा के बाहर परस्पर व्यवहार के लिए सीमाएँ तय करना, साथ मिलकर कक्षा के नियम व विधान बनाना, बच्चों की मानसिक स्वास्थ्य सम्बन्धी ज़रूरतों को सुनना, कठिन समय में उनके साथ खड़े होना, अवधारणा और विचारों के साथ उन्हें चुनौती देना, उनके अनुरोधों को इन्कार करना, रचनात्मक फ़ीडबैक प्रदान कराना आदि।

हालाँकि, बच्चों की ख़ुशहाली के लिए शिक्षक की भूमिका को इस तरह अभिव्यक्त करने का यह मतलब नहीं है कि बच्चों की ख़ुशहाली सुनिश्चित करना एकमात्र शिक्षक की ज़िम्मेदारी है। स्कूल रिश्तों का एक जाल होता है और स्कूल के भीतर ख़ुशहाली कई स्तरों पर प्रकट होती है - अन्तःवैयक्तिक, अन्तर्वैयक्तिक और संस्थानिक। इसलिए ख़ुशहाली एक ऐसा प्रमुख शैक्षिक सरोकार है जिस पर स्कूल से जुड़े सभी कर्ता-धर्ताओं को ध्यान देना होता है - प्रधान अध्यापक/ अध्यापिकाएँ, अध्यापक/ अध्यापिकाएँ, ग़ैर-शैक्षिक स्टाफ़ और माता-पिता को भी। बच्चों के जीवन में ख़ुशहाली का केन्द्रीय महत्त्व होने से शिक्षक की तैयारी कार्यक्रमों में भी इन आयामों पर ध्यान देना महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षक-शिक्षा की शिक्षणविधि और बच्चों की ख़ुशहाली

सेवा-पूर्व शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम भावी शिक्षकों के लिए सम्पर्क का पहला बिन्दु होते हैं जहाँ वे ज्ञान, कौशल और मूल्यों के सन्दर्भ में अपनी क्षमताओं को विकसित कर सकते हैं। शिक्षक-शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (NCFTE 2009) शिक्षकों की तैयारी की दृष्टि को उजागर करते हुए बताती है कि, ''शिक्षकों की तैयारी इस तरह होनी चाहिए कि वे बच्चों की देखभाल कर सकें, उनके साथ लुत्फ़ उठा सकें, ज्ञान की खोज कर सकें, समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी को उठा सकें, बेहतर दुनिया के निर्माण के लिए काम कर सकें, शिक्षार्थियों की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित कर सकें, न्याय के प्रति प्रतिबद्धता रख सकें और सामाजिक पुनर्निर्माण के लिए उत्साहित हो सकें।'' (NCFTE, p- 20)।

विद्यार्थी-शिक्षकों की भूमिका

विद्यार्थी-शिक्षकों की तैयारी इस तरह होनी चाहिए कि वे अपनी कक्षा में विकासात्मक ज़रूरतों और विविधता पर ध्यान दे सकें। बच्चों की ख़ुशहाली के सामने चुनौतियाँ कक्षा के अन्दर और बाहर, दोनों जगहों के कारकों से आ सकती हैं। ख़ासतौर पर कठिन सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे व्यापक रूप से संघर्ष, शारीरिक दण्ड, हिंसा, लांछन और भेदभाव का अनुभव कर सकते हैं। इन घटनाओं से कक्षा में उनके शैक्षिक परिणामों पर असर पड़ता है और उनकी भावनात्मक ख़ुशहाली में अड़चन आती है। विद्यार्थी-शिक्षकों को इन परिस्थितियों की तरफ़ संवेदनशीलता और लचीलेपन के साथ ध्यान देना चाहिए।

शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रम विद्यार्थी-शिक्षकों को इसके लिए तैयार कर सकते हैं कि वे अपनी कक्षाओं में बच्चों को समर्थ बनाने वाले परिवेश को पोषित कर सकें। ये कार्यक्रम इन तरीक़ों से ऐसा कर सकते हैं — **क)** अपनी कक्षाओं में परवाह करने वाले व्यवहार करने के लिए उन्हें ज्ञान, कौशल और मूल्य प्रदान करके, **ख)** उन्हें विभिन्न तरीक़े के विशिष्ट शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ तैयार करके, जिससे वे कक्षा और स्कूल परिसर के भीतर परवाह करने वाले समुदाय बना सकें, **ग)** बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों के प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देकर। नीचे इन लक्ष्यों को हासिल करने के लिए कुछ शिक्षणशास्त्रीय दृष्टिकोणों का ज़िक्र किया गया है। इन दृष्टिकोणों के लिए शिक्षक-शिक्षा के पाठ्यक्रम में अलग समय या जगह की ज़रूरत नहीं होती। शिक्षक प्रशिक्षक इन्हें सिद्धान्त या व्यवहार सम्बन्धी पाठ्यक्रमों के अपने शिक्षण में समाहित कर सकते हैं।

ख़ुशहाली के प्रोत्साहन के विभिन्न आयाम

नीचे जिन दृष्टिकोणों को रेखांकित किया गया है उनमें तीन तत्व शामिल हैं — **1)** वह क्षेत्र जिसमें शिक्षकों के तैयार होने की ज़रूरत है, **2)** इस क्षेत्र को शामिल करने के लिए तर्क और **3)** सम्भावित पाठ्यक्रम-सम्बन्धी व शैक्षणिक दृष्टिकोण।

भेदभाव और पूर्वाग्रहों से निपटना

सरकारी स्कूलों में बच्चे भेदभाव का अनुभव कर सकते हैं जो सामाजिक वर्ग, जेंडर, धर्म, जाति, भाषा, विकलांगता और यौनिक उन्मुखता में अन्तर से पैदा होते हैं। भेदभाव मानवीयता का उल्लंघन है और यह सामाजिक गठजोड़, शैक्षिक सफ़लता और बच्चों की बेहतरी को कमज़ोर करता है। शिक्षकों को

कक्षा में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष भेदभाव के सम्भावित रूपों के साथ ही भेदभाव के विभिन्न स्रोतों से अवगत होना चाहिए, जैसे उनके अपने दृष्टिकोण, स्कूल के नियम, पाठ्यचर्या, शैक्षणिक व्यवहार, शिक्षण-शिक्षार्जन सामग्री और भोजन व स्कूल के अन्य आधारभूत ढाँचे तक पहुँच।

शिक्षक-शिक्षा (TE) कार्यक्रम ऐसे होने चाहिए कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों को बचपन, सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों, सीखने, शिक्षण व विविधता से सम्बन्धित अनेक मुद्दों के बारे में अपनी धारणाओं, मान्यताओं और रूढ़िबद्ध विचारों का परीक्षण करने में मदद कर सकें। जाति, वर्ग, धर्म, जेंडर व योग्यता जैसी उनकी अपनी पहचानों के परीक्षण के ज़रिए 'स्वयं, सन्दर्भों व सम्बन्धों' की पड़ताल करके विविधता और ख़ुशहाली के बारे में उनकी संवेदनाओं और संवेदनशीलता को विकसित किया जा सकता है। सेवा-पूर्व शिक्षकों की कक्षाओं में इस बात की समझ बनाने के लिए चर्चा हो सकती है कि भेदभाव का ख़तरा किसे हो सकता है, भेदभाव को कम करने के लिए क्या तरीक़े अपनाए जा सकते हैं और भेदभाव का ख़तरा उठा रहे बच्चों की सहायता कैसे की जा सकती है। साथ ही समावेशन को बढ़ावा देने और स्कूलों व कक्षाओं में विविधता के फ़ायदों को उजागर करने पर भी ध्यान दिया जा सकता है।

हिंसा की रोकथाम

स्कूल ख़ुशहाली, शान्ति और समावेशन के सुरक्षित स्थान होने चाहिए। बच्चों को हिंसा से सुरक्षित रखना उनका दायित्व है। हालाँकि, शिक्षकों और अन्य बच्चों द्वारा मारने और धमकाने (साइबर धमकी सहित) के रूप में बच्चों के ऊपर विभिन्न तरह की प्रत्यक्ष हिंसा की जाती है। भय, शारीरिक दण्ड और कक्षा में प्रतिस्पर्धा से बच्चों में चिन्ता व्याप्त हो जाती है। भावी शिक्षकों को इस रूप में शिक्षित करने की ज़रूरत है कि वे बच्चों के साथ संवाद के लिए सुरक्षित और साहसपूर्ण स्थान बनाने के उद्देश्य से लोकतांत्रिक और रचनात्मक तरीक़े विकसित कर सकें। उन्हें कक्षा में अनुशासन और संवाद के लिए तरह-तरह के अहिंसात्मक तरीक़े सिखाए जाने की ज़रूरत है। विद्यार्थी-शिक्षकों को इस रूप में तैयार करने की ज़रूरत है कि वे बच्चों को समानुभूति के साथ सुन सकें।

झूठी ख़बरों और ग़लत सूचनाओं से निपटना

झूठा प्रचार, ग़लत सूचना और झूठी ख़बरें चाहे अनचाहे चोट पहुँचा सकती हैं। स्कूल के अन्दर ये विद्यार्थियों के विचारों का ध्रुवीकरण कर सकती हैं और लोकतांत्रिक तरीक़े से काम करने के तरीक़ों को क्षति पहुँचा सकती हैं। विभिन्न तरीक़े के डिजिटल माध्यमों के ज़रिए लिंक, टेक्स्ट, वीडियो या चित्र शेयर करने से सूचनाएँ वायरल हो जाती हैं। छोटे बच्चों के ग़लत सूचनाओं और झूठी ख़बरों के चपेट में आने की अत्यधिक सम्भावना होती है। कभी-कभी विद्यार्थी भी शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और अपने सहपाठियों के बारे में नकारात्मक तस्वीर सम्प्रेषित करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा लेते हैं। इसके कारण उनकी शारीरिक और मानसिक ख़ुशहाली पर गम्भीर दबाव पड़ सकता है। सम्भावित शिक्षकों को मीडिया और डिजिटल साक्षरता के बारे में प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है। इसमें मीडिया के विभिन्न स्रोतों से मिलने वाली सूचनाओं को समझने व उनका आकलन करने, सूचनाओं का आलोचनात्मक तरीक़े से मूल्यांकन करने, तर्क करने, साक्ष्यों का प्रयोग करने और सन्दर्भों के भीतर व्याख्याएँ करने की रणनीतियों को विकसित करना शामिल हो सकता है। सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे इस शिक्षार्जन को विभिन्न विषयों के पाठ्यक्रम के साथ एकीकृत करने के कौशल हासिल करें।

टकरावों (conflict) को सम्हालना

चूँकि शिक्षकों के परवाह करने के काम में रिश्ते में पारस्परिकता और सामाजिक व भावनात्मक जुड़ावों के प्रति प्रतिबद्धता निहित होती है, इसलिए इसके साथ सम्बन्धित तनाव भी आते हैं। सम्भावित शिक्षकों के लिए ज़रूरी है कि वे कक्षा के भीतर और कक्षा के बाहर होने वाली संवेदनशील और जटिल नैतिक परेशानियों और टकरावों को हल करें। उन्हें नज़रअन्दाज़ करने से बच्चों की ख़ुशहाली को और स्वयं उनको भी नुक़सान उठाना पड़ सकता है। सहपाठियों की मध्यस्थता, पुनर्स्थापनात्मक न्याय और टकराव प्रबन्धन जैसे तरीक़े विद्यार्थी-शिक्षकों को उनके कार्यक्रम के दौरान सिखाए जा सकते हैं। टकराव प्रबन्धन में इस तरह का प्रशिक्षण उनकी अपनी पूर्व-धारणाओं और पूर्वाग्रहों को सामने लाने में मदद करता है और उन्हें इस बात का साहस प्रदान करता है कि वे आत्मविश्वास के साथ अपनी कक्षा में टकरावों से निपट सकें। टकरावों से निपटने के इन तरीक़ों में हिस्सेदारी करने से वे अपने पढ़ाने के काम को व बच्चों की बेहतरी को सुनिश्चित करने की अपनी अध्यापकीय भूमिका को समझ पाते हैं। इससे उन्हें यह बात समझने में मदद मिलती है कि उनके रोज़ाना के व्यक्तिगत जीवन में और शिक्षक के रूप में उनके पेशेवर काम में टकराव अन्तर्निहित होते हैं।

विवादास्पद मुद्दों पर ध्यान देना, उन्हें हल करना

स्कूल समाज का संक्षिप्त रूप होते हैं और जिन चुनौतियों से समाज घिरा होता है वे प्रायः स्कूल के कामकाज में भी प्रतिबिम्बित होते हैं। बच्चे अपने इर्द-गिर्द होने वाले अन्याय और नकारात्मक घटनाओं से परेशानी महसूस कर सकते हैं।

विवादास्पद मुद्दे ग़रीबी, आतंकवाद, जेंडर, जाति या जीवन की किसी दूसरी घटनाओं से सम्बन्धित हो सकते हैं, जहाँ ऐसा लग सकता है कि असमानता और न्याय के सवालों को चुनौती दी जा रही हो। ये सवाल आमतौर पर अपनी प्रकृति में बहुत भावनात्मक होते हैं और ज़्यादातर बच्चों के लिए (और वयस्कों के लिए भी) इन पर तार्किक तरीक़े से चर्चा करना चुनौतीपूर्ण होता है। ये चीज़ें कक्षा में भी उभर सकती हैं या कभी-कभी शिक्षक इन्हें बच्चों के बीच भी सम्मानजनक तरीक़े से उठा सकते हैं। इसलिए, सेवा-पूर्व शिक्षकों के लिए ऐसी समझ रखना ज़रूरी है जिससे वे इन विवादास्पद मुद्दों से निपट सकें। इन मुद्दों पर सहयोगपूर्ण, विचारशील पड़ताल व संवाद से विविध परिप्रेक्ष्य विकसित करने में मदद मिल सकती है और दूसरों के विश्वासों और विचारों के बारे में खुलापन रखना, आलोचनात्मक चिन्तन, सम्मानजनक तरीक़े से बोलना जैसी लोकतांत्रिक क्षमताओं व अस्पष्टता व अनिश्चितता के साथ सामंजस्य बैठाने की क्षमता को पोषित किया जा सकता है। इससे सेवा-पूर्व शिक्षकों को यह प्रोत्साहन मिलता है कि वे एक-दूसरे को सुनें और सम्भावनाओं के बारे में संवेदनशील तरीक़े से काम करें।

सामाजिक न्याय और परवाह करने के परिप्रेक्ष्य से, अपने शैक्षिक व्यवहारों का परीक्षण करने से विद्यार्थी-शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि सामाजिक यथार्थ गतिशील और तरल होते हैं व उन्हें रोज़मर्रा के जीवन के आधार पर इनके बारे में आलोचनात्मक ढंग से विचार करने की ज़रूरत है। ऊपर उल्लिखित टकराव प्रबन्धन के तरीक़ों के अलावा सम्भावित विद्यार्थियों के लिए विवादास्पद मुद्दों को पढ़ाने हेतु 'अकादमिक विवाद' जैसे सहयोगपूर्ण अधिगम के तरीक़ों को भी इस्तेमाल किया जा सकता है। इस तरह का प्रशिक्षण उन्हें इस बात के लिए भी तैयार करता है कि वे कमज़ोर पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों को इस तरह सुरक्षित कर सकें कि वे अप्रत्याशित टिप्पणियों और सवालों से रचनात्मक तरीक़े से निपट सकें।

बच्चों को सुनना

बच्चे स्कूल में अपने जीवन और उसके अवयवों (पाठ्यचर्या, बच्चे-शिक्षक सम्बन्ध, शैक्षणिक प्रक्रियाएँ, पाठ्यचर्या-सम्बन्धी व खेल गतिविधियाँ, खेल का मैदान, आधारभूत ढाँचा, सहपाठियों के साथ रिश्ते) के सन्दर्भ में अपने आपको किस तरह देखते हैं इससे हमें वह अन्तर्दृष्टि मिलती है कि बच्चे स्कूल में अपनी ख़ुशहाली को कैसे देखते हैं। बच्चों के परिप्रेक्ष्य को सुनना उन स्कूलों के लिए केन्द्रीय और परवाह करने वाला एजेंडा होना चाहिए जो समावेशी होना चाहते हैं। इसलिए, सेवा-पूर्व शिक्षक कार्यक्रमों के लिए यह ज़रूरी है कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों को उन तरीक़ों और रास्तों को समझने में मदद करें जिनके ज़रिए उन विमर्शों में बच्चों की भागीदारी को बढ़ावा मिल सके जो उनके जीवन से सरोकार रखते हैं, जैसे कि बच्चों को सीखने की प्रक्रियाओं में कैसे शामिल किया जाए और कैसे उनकी सलाह ली जाए, स्कूल व कक्षा गतिविधियों की निर्णय प्रक्रिया में उन्हें कैसे शामिल किया जाए और अपने विचारों को प्रकट करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित कैसे किया जाए।

अपने संविधान और बच्चों के अन्य कानूनी अधिकारों के बारे में एक समझ विकसित करना

भारत का संविधान नागरिकों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक विस्तृत रूपरेखा का प्रतिनिधित्व करता है और भारत के समूचे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास के लिए एक ढाँचे के रूप में काम करता है। स्कूल के व्यवहारों में संविधान में दर्ज बुनियादी मूल्य जैसे समानता, निष्पक्षता, धर्मनिरपेक्षता, न्याय, स्वतंत्रता और भाईचारा प्रतिबिम्बित होने चाहिए और उन्हें बच्चों व शिक्षकों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि वे अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में इन मूल्यों का पालन करें। पाठ्यचर्या-सम्बन्धी व शैक्षणिक कार्य संवैधानिक मूल्यों, मूलभूत कर्तव्यों और बच्चों के अधिकारों के बारे में ज्ञान और आलोचनात्मक समझ से प्रेरित होने चाहिए।

सेवा-पूर्व शिक्षकों को संविधान व उसके मूल्यों के बारे में व अपने कक्षा व्यवहारों से इन्हें जोड़ने के तरीक़ों के बारे में शिक्षित किए जाने की ज़रूरत है। संविधान और बच्चों के अन्य कानूनी अधिकारों का ज्ञान संविधान की रोशनी में संघर्षों और विवादास्पद मुद्दों से निपटने में भी शिक्षकों की मदद करता है। संविधान की शिक्षा से सेवा-पूर्व शिक्षकों को यह समझने में मदद मिलेगी कि बच्चों की ख़ुशहाली को सुनिश्चित करने के लिए बच्चों की गरिमा और सम्मान की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं किया जा सकता।

आत्मविकास के अवसर

बच्चों की ख़ुशहाली के लिए और परवाह करने वाले समुदायों के रूप में स्कूल के निर्माण के लिए शिक्षकों की ख़ुद की ख़ुशहाली महत्त्वपूर्ण है। शिक्षण जैसे देखभाल और परवाह करने वाले पेशे भावनात्मक रूप से थका देने वाले हो सकते हैं। शिक्षण के स्थायित्व के लिए उच्च प्रेरणा, प्रतिबद्धता और स्वायत्तता ज़रूरी है। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों के लिए यह ज़रूरी है कि वे विद्यार्थी-शिक्षकों को न सिर्फ़ बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़रूरतों के ज्ञान से लैस करें बल्कि ख़ुद अपनी सामाजिक और भावनात्मक क्षमताओं को विकसित करने की रणनीतियाँ भी प्रदान करें। कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच

का अनुभव ख़ुद को समझने के अवसरों को प्रोत्साहित करता है, वयस्क विद्यार्थियों में सम्बन्धात्मक क्षमताओं को मज़बूत करता है और उनकी शारीरिक व मनोवैज्ञानिक ख़ुशहाली को बढ़ाता है। उदाहरण के लिए, महामारी के दौरान ऑनलाइन कक्षाओं में जिन विद्यार्थियों (एमए, शिक्षा) ने विश्वविद्यालय में मेरा कोर्स 'शिक्षक और शिक्षण' लिया था, वे 90 मिनट की कक्षा में पहले 15 मिनट अपनी कला को साझा करते थे या कोई गीत प्रस्तुत करते थे, कोई वाद्ययंत्र बजाते थे या बुनाई, स्केचिंग, मण्डला कला या योग सिखाते थे। ज़्यादातर विद्यार्थी इस छोटे सत्र के दौरान अपने वीडियो ऑन रखते थे। अपने फ़ीडबैक में कक्षा के ज़्यादातर विद्यार्थियों ने यह साझा किया कि इन सौन्दर्यात्मक अनुभवों से उन्हें बहुत ख़ुशी मिली, अपने सहपाठियों के बीच भावनात्मक जुड़ाव मज़बूत हुआ और अकादमिक शिक्षा के दायरों के बाहर अपने दोस्तों के साथ जुड़ने के अवसर मिले। इस अनुभव से निकलकर मैंने आमने-सामने की पढ़ाई के दौरान भी इस प्रयास को जारी रखा और विद्यार्थियों ने इस बारे में भी उसी तरह के विचार और भावनाएँ व्यक्त कीं। कोई ठोस अवधारणा तैयार करने के लिए इस प्रक्रिया और इसके परिणामों की गहराई से परीक्षण करने की ज़रूरत है, लेकिन वयस्क विद्यार्थियों के विचारों से ऐसा लगता है कि आत्मविकास और जागरूकता के इन रास्तों के प्रति उनका सकारात्मक रुझान है।

अन्तिम अवलोकन

शिक्षण, बच्चों के सामाजिक-भावनात्मक व सांस्कृतिक संसारों और वृहत्तर सामाजिक-राजनीतिक, ऐतिहासिक व आर्थिक सन्दर्भों के मिलन पर घटित होता है। इन दोनों दुनियाओं की समझ हासिल करना शिक्षण के काम को करने के लिए बहुत ज़रूरी है। पढ़ाना सीखना एक जटिल काम है। एक शिक्षक बनने के लिए बच्चों के सीखने और जानने के तरीक़ों के साथ सामंजस्य बैठाना और बच्चों की सामाजिक-भावनात्मक ज़िन्दगियों के लिए समानुभूति पैदा करने की क्षमता होना ज़रूरी है। विद्यार्थी-शिक्षकों के लिए पेशेवर आवश्यकता के रूप में यह ज़रूरी है कि वे बच्चों की सामाजिक पृष्ठभूमियों के प्रति परवाह, सम्मान, समानुभूति, स्नेह और संवेदनशीलता के गुणों को विकसित करें। बच्चों और स्कूलों के प्रति विद्यार्थी-शिक्षकों के सामाजिक-भावनात्मक रुझान व नैतिक बोध को विकसित करने के लिए अनुभवों की एक विस्तृत श्रेणी ज़रूरी है जिसमें पढ़ना, लिखना, प्रश्न करना, शिक्षण, संवाद, सहयोगपूर्ण पड़ताल, आत्मविकास, चिन्तन, आत्मनिरीक्षण और रचनात्मक अभिव्यक्ति शामिल हैं। यदि ये अनुभव शिक्षकों को उन्नति या ख़ुशहाली के शैक्षिक उद्देश्यों को समझने की तरफ़ प्रेरित कर सकें और जिन स्कूल समुदायों में वे हैं उनके महत्त्वपूर्ण क़िरदार बनने में मदद कर सकें, तो यह आत्म नवीनीकरण, जीवन पर्यन्त चलने वाली खोजबीन व सीखने की ओर सम्भावनाओं से भरी यात्रा की एक अच्छी शुरुआत मानी जाएगी।

राजश्री श्रीनिवासन अज़ीम प्रेमजी विश्विद्यालय, बेंगलूरु स्थित स्कूल ऑफ़ एजुकेशन में प्रोफ़ेसर हैं। उनकी रुचियाँ बाल विकास और शिक्षक-शिक्षा के क्षेत्र की शैक्षणिक प्रक्रियाओं में हैं। उनसे *rajashree@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय